चरक

For P.G.Sem-1

CC-4,Unit-5

आज से करीब ढाई हजार साल पहले हमारे देश में आत्रेय नाम के प्रख्यात चिकित्सक हुए थे। उन्होंने अपने छः शिष्यों को आयुर्वेद पर एक अलग पुस्तक लिखने को कहा था। उनके एक शिष्य 'अग्निवेश' का ग्रंथ अधिक प्रसिद्ध हुआ। अग्निवेश के इस ग्रंथ को बाद में चरक ने नए ढंग से लिखकर और नई बातें जोड़कर तैयार किया। यही ग्रंथ '**चरक संहिता**' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह आयुर्वेद का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ है।

चरक कब हुए, कहां के थे आदि बातों के बारे में हमें स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। चरक एक शाखा का नाम है जिसकी विस्तृत चर्चा यजुर्वेद में है। इसी शाखावाला चरक 'कनिष्क' का राजवैद्य था। चरक संहिता कार्य क्षेत्र के 'काय-चिकित्सा' है।

चरक संहिता 'संस्कृत भाषा' में है और गद्य तथा पद्ध में लिखी गई है आयुर्वेद के ग्रंथों को आठ खंडों और 120 अध्यायों में बांटने की परंपरा रही है। चरक संहिता में भी यही किया गया है।

चरक संहिता के पहले खंड '**सूत्र स्थान'** में औषधि विज्ञान, आहार, पथ्य और शरीर तथा मन के रोगों की चिकित्सा का वर्णन है। दूसरे '**निदान स्थान'** में प्रमुख रोगों के कारण समझाए गए हैं। शरीर वर्धक भोजन की जानकारी तीसरे '**विमान स्थान'** में की गई है। '**शरीर स्थान'** में शरीर की रचना की जानकारी है। '**इंद्रिय स्थान'** में रोगों की चिकित्सा का वर्णन है। छठे '**चिकित्सा स्थान'** में कुछ खास रोगों का

इलाज बताया गया है। **'कल्प स्थान'** और **'सिद्ध स्थान'** में छोटे-मोटे इलाज की जानकारी है।

इस ग्रंथ में करीब 20- 25 तरह के चावलों का उल्लेख है। चिकित्सा में अनार के सिवाय दूसरे किसी फल का उपयोग नहीं है। स्त्री रोग को दूर करने के लिए केला उपयोगी बताया गया है। इस ग्रंथ में दूध, दही, घी आदि के गुण- दोष विवेचित है। चार प्रकार के मधु का वर्णन है।

चरक संहिता में शरीर और मन के पारस्परिक संबंध को काफी बारीक से देखा गया है तथा निदान एवं चिकित्सा में देह- मानस (Psychosomatic) की अवधारणा स्वीकृत की गई है।

'आचार-रसायन' चरक की मौलिक देन है। आचार का पालन करने से, बिना औषध के भी रसायन का फल प्राप्त होता है और बिना आचार पालन के औषध भी व्यर्थ हो जाती है।

चरक संहिता के अनुसार चिकित्सा की पढ़ाई करने के लिए वह लड़का योग्य समझा जाता जो शांत, आर्यप्रकृति, अछुद्रकर्मा, वैध कुल में उत्पन्न हो तथा उसमें वैधक व्यवसाय के अनुकूल आचरण हो, शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं उत्तम गुणों से युक्त हो, आयुर्वेद के अध्ययन में रुचि एवं लगन हो, आचार्य के उपदेशों का अनुसरण करने वाला तथा अनुशासन मानने वाला हो। उसे शांत, सात्विक, विनम्र तथा आलस्य ,क्रोध और व्यसन से मुक्त होना आवश्यक माना गया है। साथ ही सदाचारी, दयालु और दूसरों की भलाई सोचने वाला हो तभी वह शिष्य आचार्य का संरक्षण प्राप्त कर सकता था।

चरक संहिता में हड्डियों की संख्या 360 और त्वचा की संख्या 6 बताई गई। चरक ने अग्नि को आयुर्वेद का मूल बताया है। शरीर के जिस भाग में जो दोष अधिक

मात्रा में रहता है उसे सामान्य भाषा में 'दोष स्थान' कहा गया है। इस दृष्टि से नाभि से नीचे वायु का, नाभि से ऊपर गले तक पित्त का और सिर में कफ का स्थान है शरीर के दोषों में वात- पित्त- कफ तीनों दोष वाले हैं।

36 प्रकार के घाव का वर्णन चरक संहिता में है जिनके 24 कारण बताए गए। चरक ने 96 प्रकार के नेत्र रोग, 28 प्रकार के कर्ण रोग, 31 प्रकार के नाक रोग, 11 प्रकार के शिरो रोग और 65 प्रकार के मुख रोग का उल्लेख किया है। इस संहिता में नकली दांत लगाने का भी उल्लेख है। चरक का रसायन प्रकरण सरल है आंवला और दूध का उपयोग बहुत सुंदर ढंग से वर्णित है। इसमें शिलाजीत, हरितिका, त्रिफला आदि बहुत रसायनों का उल्लेख है। चरक की औषधियां में मानसिक पवित्रता का ध्यान रखा गया है।

चरक ने चिकित्सालय पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि चिकित्सालय मजबूत, सीधी वायु से बचने लायक, एक पार्श्व से वायु प्रवेश करने वाला, सुविधापूर्वक जिसमें घूमा जा सके, बगल के मकान से नहीं सटा रहने वाला, धुआं,धूप,और धूल से बचा रहने वाला, पानीयुक्त स्नान के स्थान से युक्त, शौचालय तथा रसोई युक्त होना चाहिए।

चरक ने वनस्पति शास्त्र को भी अपना विवेचन का विषय बनाया है औषधियों में काम आने वाला 600 से अधिक पौधों (जड़ी- बूटियां) को चरक ने एक सुव्यवस्थित क्रम में वर्गीकृत किया तथा उनसे बनने वाली औषधियां का वर्णन किया है। उसने अनेक तरह के खनिजों जैसे क्षार, अम्ल, नमक, गंधक अल्कोहल और उनके औषधीय गुणों का विवरण प्रस्तुत किया है।

चरक संहिता में वैध के संदर्भ में कुछ हिदायतें दी गई थी जिसमें कहा गया था कि वैध को रोगियों से किसी भी हालत में शत्रुता नहीं रखनी चाहिए, रोगी के घर

की बातों को बाहर नहीं बताना चाहिए। आयुर्वेद का पंडित होना आसान नहीं है इसलिए हमेशा ज्ञान की खोज में रहना चाहिए।

आयुर्वेद की दृष्टि से चरक संहिता का महत्व तो है ही, उस जमाने के समाज को समझने के लिए यह ग्रंथ बड़ा उपयोगी है। बाद में चरक संहिता पर कई टिकाएं लिखी गई। इस ग्रंथ का अरबी भाषा में भी अनुवाद हुआ।